Chapter-5

पांचवा अध्याय – नगर में फैली समस्याएं

नागरीय समस्या

रामदरश मिश्र जी जहां एक ओर देहाती परिवेश होने के कारण देहात की समस्याओं को लिया है वहां उन्होंने नगर के परिवेश को भी लिया है । केन्द्रीय नगर से लेकर महानगरीय जीवन के संत्रास को, समाजिक सम्बन्धों और समस्याओं को रेखांकित किया है । महानगरों के सम्पूर्ण विरोधाभास, दुहरी तिहरी जिन्दगी, मानसिकता और तेवर कोगहरे स्तर पर पकड़ने में मिश्र जी को विशेष सफलता मिली है ।

शहरों और महानगरों की बढ़ती हुई जटिल जीवन पद्धति तथा बढ़ते औद्योगिक व्यवस्था के प्रभावों के फलस्वरूप बदलते सामाजिक मूल्यों तथा सम्बन्धों ने एक अकेलेपन तथा अजनबीपन का माहौल बनाया । शहरी जीवन के औद्योगीकरण के फलस्वरूप बढ़ती बेकारी और मंहगाई से प्रभावित व्यक्तिवाद और उसके परिणाम स्वरूप टूटते परिवार, सिमटते समाजिक सम्बन्ध और बिखरते जीवन मूल्यों ने भी लगातार कथाकार को यही भाव भूमि दी है ।

गांव में सभी अपने अपने स्वार्थ में लगे हुए है । शहरों से बदतर हो गये है। शहर तो कई माने इनसे बहुत अच्छे है । नीचता पूर्ण झगड़े, टंटे, लूट-पाट, मार-पीट, फूंका-तापी, चुगली-निन्दा यही तो गांव में रह गया है । शहरों में अकेले रहकर चैन की सांस तो ले सकता है । वहां अकेलेपन के तमाम साथी है, यहां तो आप अकेले है । मगर चाह कर भी अकेले नहीं रह सकते, न सार्वजनिकता का सुख है यहां, न अकेलेपन का । कोई सहायता नहीं करता, लेकिन आपके अकेलेपन को छेड़ने के लिये अनेक आलोचनाएं, गालियां, शिकायतें और आक्रमक कारवाइयां टूट पड़ती है । और तमाम साधनों के अभाव में गांव का क्या दोष ? बेचारे अभागे गांव साधनविहीन और विपन्न होकर भी गिरते जा रहे है और सरकार की दृष्टि शहरों की ओर लगी है । 1

यह सच है कि शहरों में गांव की अपेक्षा काफी सुविधाएं आम व्यक्ति को सरकार की तरफ से प्राप्त है । परन्तु नगर में भी व्यक्ति को उसी प्रकार समस्याओं का सामना करना पड़ता है । जैसे गांव में । शहर में भौतिक सुख, सुविधाएं, शहरी चमक दमक, फैशन परस्त लुभावनी चीजो को देखकर हरेक लालायित

हो उठता है । लेकिन निम्न वर्ग व मध्यवर्गीय के ये सब चीजें तो रोजी-रोटी जुटाना भी बहुत मुश्किल बात है । बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण तथा तीव्रतर बढ़ते हुए दामों ने आम व्यक्ति की कमर तोड़ दी है । हालांकि, शहर में गांव की अपेक्षा रोजगार के कई साधन है तथापि बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, कुटनीति चालों-राजनीतिक गतिविधियों, साम्प्रादायिक दंगे आदि व्यक्ति के कदम रोक लेती है । इन बढ़ते हुए प्रभावों के कारण निम्न वर्ग इसमें पिसटता चला जाता है । उनकी इन परिस्थितियों से प्रभावित होकर मिश्र जी ने उन समस्याओं को सामने रखा है। जो व्यक्ति के जीवन-यापन में बाधक सिद्ध होती है ।

।ई शिक्षा में राजनीति की व्यापकता और राजनीति की आड़ में गलत कार्य :

आजकल राजनीति सब तरफ इस तरह से छायी हुई है । बिना इसके कोई कार्य सिद्ध नहीं होता है । यहां तक शिक्षण जैसे ज्ञान के मंदिर में भी यह बुरी तरह से हावी हो गयी है । शिक्षण अधिकारी, अध्यक्ष सभी लोग इसमें शामिल होते है । जबकि शिक्षण संस्थानों में इसका कोई हस्तक्षेप नहीं होना चाहिये । मिश्र जी ने आधुनिक शिक्षण संस्थानों में राजनीति के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर उसकी तरफ संकेत किया है ।

"अपने लोग" उप0 में मिश्र जी ने दिखाया है कि शिक्षा क्षेत्र में राजनीति छायी हुई है । मैं देख रहा हूं कि हमारे कालेज की समस्या बाहर की राजनीति से जुड़ती जा रही है । यह भी सच है कि कालिज के छात्र, उनका चुनाव, उनका संघ, उनकी समस्याएं, उनकी लड़ाई सबमें बाहरी राजनीति दखल दे रही है । इसलिये उनकी समस्याएं और लड़ाइयां उनकी न रहकर राजनीतिक दलों की हो गयी है । किन्तु जब विधार्थियों के साथ हम भी इस क्षेत्र में राजनीतिक हो उठेगें तब तो शिक्षा संस्थाओं के सर्वथा अर्थ हीन हो जाने में कोई कसर नहीं रहेगी । 2

कालेज में राजनीति के आ जाने पर एक दल दूसरे दल के प्रति ईर्ष्या द्वेष की भावना रखता है । इसके लिये मार-पीट, तोड़-फोड़, दंगे, पुलिस को बुलवाना आदि कार्यवाही राजनीति ही तो करवाती है । शैक्षणिक संस्थाओं को टुच्ची

राजनीति किस प्रकार विषाक्त कर रही है । इसका जीता-जागता नमूना यह विश्वविद्यालय है । हर साल कांग्रेसियों के प्रयास से यहां-वहां छोटे छोटे कालेज खोले जा रहे है और चमचागिरी में निपुण लोग प्रिंसिपल के रूप में स्थापित किये जा रहे है । शायद राजनीति हद दर्जे की बेशरम होती है बल्कि उसे छिनाल कहा जाये तो बेहतर है । 3

चारों ओर बिखरी हुई कटी-कटी छायाएं, स्वार्थ, लिप्सा, घृणा, हिंसा की छायाएं । निष्क्रिय युवक पढ़-लिखकर अपने खाने-कमाने में लिपट जाते है या थोथी- राजनीति में फंस जाते है । पढ़ते हुए बच्चे शहरों में जाकर विकृत शहरीपन की नकल करते है और गांव आकर अपने बाप-दादों की गवंई राजनीति के शिकार होकर एक दूसरे से कट मरते है । 4

"दूसरा घर" उप0 में भी गंगाराम शास्त्री जो एक स्कूल का मालिक है । वह भी धीरे-धीरे अपने स्वार्थ व कुटनीतिक चालों से नेता बन जाता है । जिसके कारण शिक्षा चौपट हो जाती है । तथा ये मंत्री कहलवाने की खातिर लोगों में फूट डलवाते है । हिन्दू मुस्लिम को एक दूसरे के खिलाफ उकसाकर दंगे करवाते है और स्वंय तमाशा देखकर शोहरत हासिल करते है । विरोध करने वालों को डरा कर आंतकित किया जाता है । जो लोग सीधे-सादे योग्य व्यक्ति होते है । उन्हें झुठी गवाही देने पर मजबूर करते है । नहीं देने पर उनको नौकरी से निकाल दिया जाता है ।

शिवनाथ जी, राजनीति आदमी को इतना नीचे गिरा देती है । इसका इतना गहरा अनुभव मुझे नहीं था । आप मेरे मित्र है, क्या आप चाहते है कि नीचता की निम्नतम सीमा तक पहुंचकर यह बयान जारी करूं कि खुद लड़की लड़के को फांसना चाहती थी और उसके नहीं फंसने पर उसने इस केस बना दिया । मेरे लिये आदमी से बड़ी राजनीति नहीं है और तिस पर यह एक निरीह लड़की का केस है । इस केस के साथ उसका नाम भी प्रचारित किया जायेगा । आपके राजनीतिक खेल में उस बेचारी का जीवन किस तरह बर्बाद हो जायेगा । 5

इसके अलावा चुनाव में अपना प्रसारण करवाने के लिये कवि-गोष्ठियों का आयोजन करते है ।

आज का राजनैतिक वातावरण इतना विषाक्त हो गया है। शासक स्वार्थी एवं नैतिक दृष्टि से पतित हो गये है। स्वार्थ साधन ही उनका मुख्य उद्देश्य है। आज की राजनीति में फैली हुई दलबदल की सामयिक प्रवृति और गंदी राजनीति की झलक मिलती है। वस्तुत: आम आदमी के लिये नेताओं के दिल में कोई जगह नहीं है। ये लोग वायदा तो सिर्फ उल्लू सीधा करने के लिये ही करते है। इन वायदो में असहाय आदमी आसानी से फंस जाता है। पांच लाख लोगों की सभा को सम्बोधित करते हुए मंत्री जी ने घोषणा की है कि हमारी सरकार अमीर-गरीब के भेद को मिटाकर रहेगी। अब अमीरों का जोर-जुल्म कहीं चलने पायेगा। गरीबों को अच्छा खाने-पीने, पहनने, अच्छे मकान में रहने का अधिकार होगा। उनके बच्चों को पढ़ने की सभी सुविधाएं दी जायेगी। हमारी सरकार ने इस दिशा में काफी सफलता हासिल कर ली है। 5

ऐसा ही एक मासूम बालक "मुर्दा-मैदान" कहानी में मंत्री जी की मोटर के नीचे कुचला जाता है। बजाय हमदर्दी के उसको गन्दी नाली के कीड़े के समान धिक्कारा जाता है। राजनीति के नशे में व्यक्ति को मानव-मानव में भेदभाव होने लगा है। उसके पास से सहिष्णुता, दया, सहानुभुति की भावना तो लुप्त हो गयी है। जहां एक ओर तो इस राजनीति के नेता की फूलों के साथ स्वागत किया जाता है। जय-जयकारा लगाया जाता है। वहां दूसरी ओर एक बेबस, निरीह मासूम को कुचला जाता है। कहां मानवता रह गयी है। मानव को पशु के समान मार-काट कर बलि दी जाती है। बड़े-बड़े धनवान लोग राजनीति की आड़ में गलत से गलत घिनौने कार्यों को करते है। लेकिन उनका पर्दाफाश करने वालों का निर्ममता के साथ अंत कर दिया जाता है। यही राजनीति है। जिसका मिश्र जी ने बखूबी वर्णन किया है।

2) शिक्षित व्यक्तियों के लिये रोजगार की समस्या :

शहरों में गरीबी से जुड़ी एक समस्या बेकारी की है। नगरीकरण की प्रक्रिया बढ़ती हुई जनसंख्या, शिक्षा के प्रचार-प्रसार के कारण यह बेकारी का प्रश्न दिन-ब-दिन भीषण होती जा रही है। आज विश्व के अनेक देशों को बेकारी की समस्या

की सामना करना पड़ता है । यह समस्या न केवल औद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए देशों की है बल्कि सम्पन्न देशों में भी यह समस्या बढ़ रही है ।

शिक्षा के प्रचार-प्रसार के साथ इन शिक्षित बेकारों में निरन्तर वृद्धि हो रही है । इसका उत्तरदायी शिक्षा प्रणाली पर है जो पुस्तकीय ज्ञान तो देती है किन्तु व्यवसायी शिक्षा नहीं देती है ।

"एक रात" कहानी में पृथ्वीराज की अच्छी डिवीजन आने पर भी उसे नौकरी नहीं मिलती है । बेकार बैठने से वह पी0 एच0 डी0 करता है । लेकिन पी0 एच0 डी0 करने से पेट तो नहीं भरेगा । परिवार वालों के लिये कुछ जुगाड़ तो करना पड़ता है । इस बेकारी की हालत में यदि कोई मित्र भी आता है तो उसके लिये एक कप चाय भी बोझ समान लगती है । वह उससे आंखे चुराकर निकलने की करता है ऐसी अवस्था में वह स्वंय को हीन भावना से ग्रस्त पाता है ।

जो लोग इतनी गरीबी की हालत में भी केवल नौकरी के आसरे पढ़ते लिखते है । फिर भी उन्हें नौकरी नहीं मिलती है । गांव से ज्यादातर युवक शिक्षा पाने के लिये शहर में आते है और यही के होकर रह जाते है । इसलिये बेरोजगार युवकों की भीड़ भी यही चक्कर काटती है । "दूसरा घर" उप0 में कमलेश के पिता ने भीख-मांग कर अपने परिवार का पालन-पोसण किया तथा कमलेश को एम0 ए0, बी0 एड0 करवाया इस उम्मीद पर कि यह नौकरी करके परिवार का बोझ उठा सके । लेकिन शहर में आने पर कमलेश को नौकरी के लिये दर दर भटकना पड़ता है । उसको गंगाराम शास्त्री के स्कूल में प्रिंसीपल के पद पर रखा जाता है । लेकिन पगार के नाम पर उसे कुछ नहीं मिलता था । अत: वह वहां से मजबुर होकर इस्तीफा देकर हाथ का काम करने की सोचता है ।

इतना पढ़-लिख जाने पर नौकरी नहीं मिले तो व्यक्ति दोनों तरफ से जाता है । उसके अंदर हीन भावना आ जाती है । जिससे वह शिक्षित होकर भी कुछ नहीं कर सकता है । जिनको नौकरी मिलती है । वहां पर राजनीति के आ जाने से उन्हें भी निकाला जाता है । "अपने लोग" उप0 में राम विलास झूठी गवाही न देने के आरोप में नौकरी से निकाल दिये जाते है । वे ट्यूशन के आधार पर ही जैसे तैसे अपने परिवार का पालन-पोषण करते है ।

अपनी समस्याओं में आकंठ डूबा आम आदमी अपने शोषण के विरुद्ध अकेला संघर्ष नहीं कर सकता, इसलिये चेतना सम्पन्न होने के बावजूद वह शोषकों के सामने दुम हिलाता है ।

आजकल योग्यता होने के बाद भी नौकरी मिलना बहुत ही मुश्किल है । क्योंकि सिफारिश के आधार तथा रिश्वत के आधार पर काबलियत नहीं होने पर भी नौकरी आसानी से मिल जाती है । "अपने लोग" उप० में उमेश का एम० ए० फर्स्ट क्लास होने पर भी उसको लेक्चरर की नौकरी नहीं मिलती है । उसकी जगह एक सेकेण्ड क्लास का क्लर्क लेकचरर बन जाता है । स्वयं उसी कालेज में क्लर्क के पद पर होने के कारण, लेकचरर न बन पाने के कारण उसकी प्रेमिका माधवी भी उसे छोड़ देती है । यानि वह उसकी प्रतिभा को नहीं बल्कि एक ओहदे को ही चुनती है । जिससे वह कुंठित होकर पागल हो जाता है। एक योग्य व्यक्ति को उसकी योग्यता के आधार पर नौकरी न मिलने के कारण उसकी सारी उम्र पागल होकर दर दर की ठोकरे खानी पड़ती है ।

पढ़ा-लिखा होकर भी तू कितनी अकारथ जिन्दगी जी रहा है । क्या मूल्य है तेरी विद्या का । क्या अर्थ है तेरे पति और पिता होने का ? उसे लगता है कि उसके सारे अभावों का कारण है उसका पढ़ा-लिखा होना, नहीं तो वह भी रिक्शा चला लेता, मिट्टी गारा ढो लेता, ठेले पर लाद कर गली-गली सब्जी बेच लेता । शारीरिक श्रम करने वाले संपन्न तो नहीं है, किन्तु उन्हें रोटी तो मिल जाती है और वह विद्या की गठरी सिर पर लादे हुए गली गली आवाज लगाता घूम रहा है – है कोई खरीददार ? कोई नहीं पूछता । 3

"नौकरी" कहानी में महेश एम० ए० फर्स्ट क्लास तथा पी० एच० डी० होने पर नौकरी के लिये अयोग्य ठहराया जाता है । क्योंकि जातिगत आधार पर अयोग्य या कम योग्य वालों को नौकरी में लिया जाता है और योग्य व्यक्ति बेकार । इसलिये योग्य छात्र अपने भविष्य से निराश होकर आत्महत्या करने लगते है ।

मिश्र जी ने शिक्षित युवा वर्ग के प्रति चिंता व्यक्त की, न जाने कब इस समस्या का अंत होगा, जिस प्रकार शिक्षा का प्रचार प्रसार का विकास हो रहा है ।

उसी प्रकार उनकी योग्यता के आधार पर व्यवसाय, नौकरी की व्यवस्था भी होनी चाहिये। बेकारी उन्मूलनके साथ ही गरीबी का अंत सम्भव होगा।

3) मकान की समस्या :

हमारे देश की मुख्य समस्याएं रोटी, कपड़ा के बाद तीसरी अनिवार्य आवश्यकता मकान की है। आज मकान बनाने की लालसा आम आदमी के लिये एक प्यारा सा सपना हो गई है। इसे साकार करना जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि माना जाता है।. जो आम आदमी के लिये बहुत ही मुश्किल बात है। कहावत है " शहरमां रोटलो मले पण ओटलो न मले"। शहर में खाने को एक बार मिल जाता है पर रहने की समस्या बड़ी विकट है। मिश्र जी ने इस समस्या की ओर हमारा ध्यान आकर्षित किया है। हमारे देश में अधिकांश लोगों के पास रहने के लिये घर नहीं है। जो लोग घर की व्यवस्था कर सकने में सक्षम नहीं है वे पेड़ के नीचे या फुटपाथ पर ही जैसे तैसे अपना गुजारा कर लेते है। इसका मूल कारण बढ़ती हुई जनसंख्या है। दिनोदिन जनसंख्या के बढ़ने के साथ-साथ यह समस्या भी बढ़ती जा रही है। जिसका असर निम्न वर्ग के साथ मध्यम वर्ग पर पड़ता है। बड़े बड़े शहरों में तो एक मकान के ऊपर कई कई मंजिलें बनवा कर रहते है। निम्न वर्ग के लोग झुग्गी-झोपड़ी में एक साथ कई कई लोग रहते है। जिसके कारण सफाई की तनिक भी व्यवस्था न होने के कारण बीमारी फैलने तथा वातावरण के दूषित होने की ज्यादा संभावना रहती है।

"इकसठ कहानियों में"पराया शहर) कहानी में एक प्रोफेसर का ट्रांसफर होने की वजह से उसे मकान के लिये बहुत परेशानी उठानी पड़ती है।

शहर की तरफ आते समय उसने देखा दूर दूर तक फैले हुए मकान। इन्हीं मकानों में से कोई मकान उसके लिये भी होगा - पता नहीं, कब मिलेगा, कितना घूमा है उसकी तलाश में। इस बीमारी में वह कहां जाये, कैसे खोजे ? मकान की खोज की ही तो यह उपलब्धि है। 8

यहां पर प्रोफेसर की मानसिक स्थिति का वर्णन किया गया है। जबकि वह स्वयं अकेला मकान देखकर फिर परिवार को लेने गया था। लेकिन परिवार

के लाने के बाद मकान-मालिक उसको मकान देने से इंकार कर देता है । उसकी पत्नी भी गर्भवती पूरे समय पर थी । ऐसी हालत में वह परिवार को लेकर कहां जाता । वह स्वंय भी "फ्लू" में था ।

व्यक्ति को मकान की जब इतनी आवश्यकता होती है तो यह देखना भी भूल जाते है । कि यह जगह उसकी रहने के लायक है या नहीं । न रहने का विकल्प उसी के हाथ में है, उसे रहना है, इतना ही भर वह जानता है ।

"दिनचर्या" में भी मकान की समस्या बताते हुए निम्न वर्ग के लोगो की दशा बतायी गयी है । झोपड़ी क्या है, ईंट खड़ी कर उस पर टीन का एक पतरा डाल दिया गया है, ऐसे ही मकान बनाकर मजदूर रहते है । लेकिन अब तो खाली जगहों में भी कोठियां बनती जा रही है । तो मजदूरों को बहुत ही परेशानी उठानी पड़ती है । उन लोगों को तो दिशा-मैदान जाने के लिये बहुत दूर जाना पड़ता है । वे लोग खुले में काम करते है, खुले में सोते है, खुले में बेपर्द होकर मरद और औरत सभी पास-पास बैठते है, कहीं भी उनका अपना नहीं है । १

जो लोग दूसरों के मकान बनाते है । उनको स्वंय के लिय मकान नहीं मिलते है । "दूसरा घर" उप0 में तो मकान की बहुत समस्याएं बतायी गयी है । जो लोग गांव छोड़कर शहर में कमाने के लिये आते है । तो वह शहर में मकान न मिलने के कारण वह अपने परिवार को नहीं ला सकते है । जिसके कारण उनको दूहरे खर्चे वहन करने पड़ते है । शंकर भाई का परिवार गांव में उसके भाइयों के साथ दुखी रहता था । वह चाहते हुए भी अपने परिवार को यहां नहीं ला सकता था क्योंकि वह खुदी एक चाल में एक छोटे से कमरे में रहता था । जहां पर पूरी तरह से सफाई व सुविधाएं भी नहीं थी । दूसरा कमलेश के मामा एक ऐसी बस्ती में रहते थे जिसमें एक छोटे कमरे में पांच-छह सदस्य रहते थे । पास में गन्दे नाले की दुर्गन्ध वातावरण को दुषित करती थी ।

गरीबी के कारण किराया न दे पा सकने के कारण फेंकू तो पेड़ के नीचे ही विश्राम कर लेता है । दंगे-फसाद के समय उसका सुरक्षित स्थान न होने की वजह से उसका अंत ही हो जाता है ।

इस तरह गरीब व्यक्ति अपनी पूर्ण तरह से सुरक्षा का उपाय भी नहीं कर सकता है। धनी वर्ग तो पैसे के बल पर सस्ती जमीनें लेकर न रख लेते है। तथा जमीन का भाव बढ़ने का इंतजार करते है। "वह औरत" कहानी में इसी प्रकार के लोगों का चित्रण मिलता है। "मकान" कहानी में बताया गया है यदि कोई मध्यम वर्ग का व्यक्ति मकान बनवा लेता है तो वे उसका आधा भाग किराये पर दे देते है फिर मकान-मालकिन बनकर अपनी क्रूरता और दंभ का नया रूप उभारते है।

अजीब लोग है, उपर से थूक देगें, छत पर कंघी करके बाल आगे फेंक देंगे, बच्चे भुट्टा खाकर खुखड़ी फेंक देगें, ऊपर से पानी फेंक देगें, पूछने पर कोई बोलेगा नहीं, सब सवा जयेगें। जब दोपहर को सोने का समय होगा, तब बुढ़िया ऊपर मसाला कूटने लगेगी ठक-ठक ठक-ठक चाहे कोई बीमार हो, चाहे कोई परेशान हो। दोपहर को बगल की छजली के नीचे ये सब चौपाल जमा देंगे। कुछ कहने पर कहेगें- हमारा मकान है, हम चाहे जो भी करें। 10

मकान कहानी में भी मकान-मालकिन का किरायेदार के प्रति दुर्व्यवहार बताया गया है। कि किस प्रकार मकान-मालकिन अपना दंभ रखता है। बड़प्पन जताता है और किरायेदारों को तुच्छ समझते है

4) संयुक्त परिवार की समस्या :

गांव में तो परिवार के लोग साथ रहते है तथा उनका व्यवसाय भी एक सा रहता है, इसके लिये उनके आपसी सम्बन्धों में इतना मतभेद नहीं रहता है। जबकि शहरों में विकेन्द्रीयकरण की स्थिति बहुत पायी जाती है। दूसरे बढ़ती हुई मंहगाई के कारण लोग अपना ही गुजारा ठीक प्रकार से नहीं कर सकते है। तो उनको परिवार के अन्य सदस्य, भाई का भाई से, बेटे को अपने मां-बाप से तथा रिश्तेदारों का पालन-पोषण भार के समान लगता है। हर कोई अपने स्वार्थ की लिप्सा में पूर्णत: लिप्त है। रिश्ते-सम्बन्धी से कोई लगाव नहीं है। दूसरे का हक मारकर स्वंय उस पर अधिकार करना चाहते है। अपना खून-खून को स्वीकार

नहीं करता है, उससे ईर्ष्या भाव रखते है । "घर" कहानी में बलराम अपने भाई के व उसके खानदान के लिय अपना सर्वस्य न्यौछावर कर देता है । अपनी शादी न करके अपने भाई के परिवार को पालने पोसन की जिम्मेदारी उठाता है । लेकिन यही उसके भाई के बेटे व पोते उसको नफरत की निगाह से देखते है ।

वह यह तो जरूर समझता था कि घर उसी का है लेकिन उस घर में वह फालतू आदमी भी रह सकता है, उसकी निगाह एहसान की था । नहीं एहसान की ही नहीं थी, स्वार्थ की भी थी । आधे खेत तो उसी के नाम थे न, रमेश इस बात को जानता था । और उसे बिना पैसे का नौकर भी तो मिला हुआ था। 11

बुढ़ापे में वह अपने घर में भी बेगानों की तरह रहा हुआ था । और अपने जीवन को ढोने के लिये मजबूर था । बंसत का एक दिन में जयराम के चाचा अपने भाई के मरने के बाद सारी जायदाद धूर्तता से हथिया लेता है । जयराम को मार-पीट कर, पढ़ना-लिखना छुड़ा कर भूखों मरने के लिय छोड़ देते है । अपना सब कुछ होते हुए भी उसे पूरी उम्र आवारा की तरह घूमते हुए गुजारनी पड़ती है ।

इसी तरह "आखिरी चिट्ठी" क0 में भी पिता के मरने के बाद तीन बेटों के होते हुए भी मां-बेटी को भटकना पड़ता है । ये न्याय-अन्याय तो आदमी ने खुद बना लिये है । बुजुर्गों के प्रति यह उपेक्षा भाव पहले कहां था । अब देखो, कमाई-धमाई में डूबे हुए लड़के मां-बाप के बेकार होते हुए भी उन्हें बोझ समझने लगते है, यह राम का न्याय नहीं है, नयी शिक्षा नये रहन-सहन और नयी व्यापरिक मनोवृत्ति का न्याय है । 12

बड़े-बड़े शहरों जैसे महानगरों में मिश्र जी ने इस स्थिति को देखते हुए उसका चित्रण किया है । जिसको अपनी मां-बहन भी बोझ लगने लगती है । आज की नयी शिक्षा परिवार को समटने को बजाय उसको तोड़ती जा रही है । "अपने लोग" उप0 व "दूसरा घर" में भी परिवार के प्रति उपेक्षा का चित्रण मिलता है । "अपने लोग" में प्रमोद के भाई रमेश व श्याम भाई के नाते उसके घर आते-जाते है, अपने-अपने परिवारों को लेकर खाते-पीते है । लेकिन प्रमोद जब उनसे गांव की खेती-बारी या अनाज की मांग करते है । तो वे इंकार कर बहाना बना देते है । वे अपना खर्चा बचाने के लिये प्रमोद के ऊपर अपना खर्चे का भार डालते है ।

इसी प्रकार बी0 लाल भी अपने बड़े भाई को बोझ समझकर अपने स्वार्थ को देखते हुए उसके हिस्से की जायदाद पर धोखे से हस्ताक्षर करवा लेता है ।

"दूसरा घर" उप0 में शंकर द्वारा कम पैसे भेजने के कारण उसकी पत्नी, बच्चे व मां को उसके भाइयों के द्वारा पीड़ित किया जाता है । जबकि उसकी मां व उसके भाइयों की मां तो वहीं हुई, लेकिन फिर भी पैसे भी मांग के कारण मां को पीड़ित करते रहते है ।

आज के आधुनिक युग में तो यह समस्या बहुत ही बलवती होती जा रही है । आज की पीढ़ी पुरानी पीढ़ी को स्वीकार नहीं करती है । वे अपने अनुसार चलना चाहते है । दखलान्दाजी करने पर परिवार के टूटने की स्थिति रहती है । माता-पिता अपनी औलाद के लिये अपनी सब खुशियां कुर्बान कर देते है । लेकिन जब उनका बक्त आता है तो उनकी औलाद उनके लिये कुछ करने के बजाय उनसे मुंह फेर लेती है ।

इनके जिन अंगों की कमाई से घर महक रहा है जिन मटमैली आंखों के आशीर्वाद की छांह में बच्चे बड़े हुए है, उन पर कोई प्यार से हाथ नहीं फेरता, घाव कर रहे है लोग । इनकी हड्डियों में अभी भी थोड़ा रस है निचोड़ लो उसे । 13

वह भी उस झोपड़ी को अपना घर कैसे कहे, जहां से उसके छोटे भाई और भौजाई ने निकाल दिया । वह बीमार हो गया था और बहुत दिन तक बीमार रहा । भाई-भौजाई के लिये वह बोझ बन गया । हाँ, जब दिल्ली में आकर दो-चार आना कमाने लगगया तो फिर घर का प्यारा बन गया । 14

यदि पैसा हो तो घर के सभी सदस्य आगे-पीछे रहते है । यदि कुछ नहीं है तो वह बोझ लगने लगता हैं । लेना सभी जानते है देना नहीं, रिश्ते-नाते भी पैसों से ही बनते है । "शेष यात्रा" कहानी में मां-बाप अपने बेटों के लिये उनके पालन-पोषण, आचारण-व्यवहार आदि पर अच्छी तरह ध्यान देकर उन्हें अच्छी शिक्षा देते है । कर्ज वगैरह लेकर मकान बनवाते है । लेकिन जब उनके बेटे इस लायक हो जाते है तो वह उनका सहारा बनने के बजाय उनसे मुंह फेर लेते है । एक बेटा डॉक्टर बन कर स्टेटस चला जाता है । दूसरा भी कहीं चला जाता है । बुढ़ापे में उन

...209...

दोनों को जब सहारे की जरूरत होती है । तब वे उन्हें छोड़ देते है । कहीं पर अपनी शादी करके अपना परिवार बनाकर रहते है । वे भूल जाते है कि जिन्होंने उन्हें इस लायक बनाया, उनके प्रति भी उनका कुछ कर्ज बनता है । लेकिन आज की युवा पुरूष अपने स्वार्थ को ही देखते है ।

मिश्र जी इस तरह की समस्याओं को रखकर युवा-पीढ़ी को जाग्रत करने की चेष्टा करते है । वे भी अपने फर्ज की ओर सचेत रहे । बड़ो की सेवा करना ही सबसे बड़ा धर्म है । यहीं सबसे बड़ा मानव का कर्तव्य है । जिसका हमें पूर्ण पालन करना चाहिये ।

5) कम आमदनी की समस्या :

महानगर जैसे शहरों में रहने वाले नौकरी, पैसे वाले लोगों को तथा निम्न वर्ग के लोगों को बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ता है । कम आमदनी पूरे परिवार को पालन-पोषण, बच्चों की पढ़ाई तथा अन्य खर्च चलाना बहुत मुश्किल काम है । मिश्र जी ने अपने कथा-साहित्य में कुछ ऐसे ही लोगों की गरीबी का यथार्थ चित्रण किया है । "चिट्ठियों के बीच" उ0 "दूसरा घर" उ0 फिर-फिर उ0 "सड़क, रोटी, एक वह, कहां जाओगे, टूटे हुए रास्ते, आदि कहानियों में मंहगाई के कारण जीवन यापन करना दुष्कर है, यह बताया गया है ।

सबसे अधिक कष्ट तो उसे तब होता है जब मामूली तनखाह पाने वाले लोगों से उसे कर्ज मांगना पड़ता है । हर बार सोचता है कि यह सब कैसे चलेगा, उसे इस संकट से उबरना चाहिये । आखिर कब तक, कब तक यह चलेगा और उसके सामने अपने दो लड़कों, दो लड़कियों का, पत्नी का और स्वंय अपना भविष्य अंधकार में डूबे पठार की तरह उभरने लगता है । 15.

पैसों के अभाव में उनके समस्याएं पैदा होती है । बच्चों बीमार पड़ने पर उसका ठीक से इलाज नहीं करवा सकते । उनके लिये मन्दिर का दवाखाना और भगवान का परसाद का ही आसरा होता है । डॉक्टर भी मुंहमांगी फीस लेते है । सरकारी अस्पताल में तो सारा दिन लाइन में खड़े-खड़े ही मरीज की हालत और खराब हो जाती है । डॉक्टरों केवल मानवता का खून करके अपने कार

बंगले बनाते जा रहे है । गरीब व्यक्ति की जान की कोई कीमत नहीं है । गरीब व्यक्ति को देखने की फुर्सत उन्हें नहीं है । तपेदिक का मरीज - जवान आदमी कितना भयानक नाम है तपेदिक । लेकिन सुना है अब यह भयानक नहीं रहा, इसकी अचूक दवाएं बन गई है । लेकिन इसमें खाने को खूब चाहिये, गोश्त, फल, दूध । भरपेट रोटी तो मिलती नहीं, गोश्त, दूध, फल कहां से मिलेगा । गरीबी सबसे बड़ी तपेदिक है, देश का कितना बड़ा हिस्सा तपेदिक से ग्रस्त है। 16

-अपने लोग" उप0 में राम-विलास की पूर्ण रूप से नौकरी न होने के कारण न तो यह मकान का किराया दे सकता है, न ही अपने बेटे का ठीक तरह से इलाज ही करवा सकता है । उसको अपने बेटे से हाथ धोना पड़ता है।न ही अपने परिवार को पौष्टिक आहार ही दे सकता है ।

चारों ओर गरीब-गरीब किसी को रहने के लिये झोपड़े नहीं है और इन सालों के मकान में से मकान निकलता रहता है । किसी को खाने को सूखी रोटी नहीं मिलती और ये जंगली भैंसे अपच के मारे डांय-डांय गंदी डकार लेते रहते है । डॉक्टर ने मुसम्मी का रस देने को कहा है । वह क्या नहीं जानता कि हिन्दुस्तान के आम आदमी को रोटी तो मिलती नहीं, मुसम्मी का रस कहां से मिलेगा । फल तो साले सेठियों की हौज में चला जाता है । 17

कई दिन का बासी पाव रोटी का एक टुकड़ा सामने पड़ा हुआ है - गन्दा काला-सा । भीला उसे देखता है - उसके खाली पेट में ऐंठन तेज हो जाती है, जवान में पानी आ जाता है, कुछ देर तक उस टुकड़े को घूरते रहने के बाद अपने को धिक्कारता है - छि:, जिसे चील, कौवे, कुत्ते और सुअर भी नहीं छू सके उसे वह उठाकर पेट में झोंके । 18

"दूसरा घर" उप0 में कमलेश अपने परिवार का पालन करने के लिये शहर में नौकरी करने आता है । लेकिन उसे यहां भी ठीक प्रकार की नौकरी नहीं मिलती है । वह अपने मामा के यहां रहता है । उसके मामा मिल की नौकरी करते हुए अपने बच्चों के साथ एक छोटे से कमरे में रहते थे । लड़की की शादी के लिये तथा बच्चों के पालन के लिये उन्हें दिन-रात दोनों समय काम करना पड़ता है । ढेंकू जिसने कभी 300 कर्जा लिया था उतारने के लिय दिन में मजदूरी तथा रात में

मिल में नौकरी करता है तथा कभी कभी अपना खून भी बेचता है । स्वंय चना खाकर पानी पी लेता है ताकि कर्जा उतार सके । इसके लिये बरसों तक वह अपने परिवार से मिलने नहीं जाता था और एक दिन दंगे-फसाद में पेड़ के नीचे ही होम हो जाता है ।

रोजी-रोटी कमाने की खातिर घर से बेघर होना पड़ता है । न जाने क्या-क्या मुसीबतों का सामना भी करना पड़ता है । "बिना दरवाजे का मकान" उप0 में दीपा के पति के अपाहिज होने पर उसे दूसरों के घर झाड़ू व बर्तन का काम करने पर अनेक जिल्लतें वे अपने लिये असुरक्षिता उठानी पड़ती है । लेकिन पेट की खातिर उसे सब कुछ सहन करना पड़ता है । वह कहती है गरीबी के बिकना बेभिचार नहीं है बीबीजी, सौकिया मरद की गोंद बदलते रहना बेभिचार है । 19

यदि अपने जुगाड़ के लिये कुछ करती है तो उन पर लांछन लगाया जाता है । जबकि जबरदस्ती करने वाले धनी वर्ग ही है । जो उनकी गरीबी व मजबूरी का फायदा उठाने की कोशिश करते है । गरीब व्यक्ति की इज्जत को इज्जत नहीं माना जाता है । धनीवर्ग की गलत कार्य करने पर भी उसकी सभी इज्जत करते है । क्योंकि पैसो का सब जगह बोलबाला है । इसके लिये गरीब व्यक्ति भी अमीर बनने के सपने देखता है । ऐसे ही "टूटे हुए रास्ते" में रामजी साइकिल के पंचर लगाता है । वह भी शहरी सुख-सुविधाओं पाने के लिये अपने घर का सब कुछ बेच कर तथा कुछ कर्ज लेकर अखबार के आये इश्तहार के अनुसार बहरीन जाता है ताकि वहां पर अधिक मात्रा में पैसा कमा सकें । लेकिन वहां पर आने के बाद कम्पनी वालों ने सुन्दर सुन्दर सपने दिखाकर सबसे रुपये ऐंठकर चल दिये । रामजी यह जानकर बहुत दुखी हुआ, उसका तो सब कुछ बर्बाद हो गया , उस पर लोग ठगी का बहानासमझने लगे ।

बड़े बड़े शहरों में ऐसे गोरखधंधे करने वाले लोगों की कमी नहीं है । जो बेचारे मासूम लोगों को धोखा देकर उनसे रुपया ऐंठता है । गरीब लोगों को दर दर की ठोकरें खाने पर छोड़ देते है । फिर शहर में उनके कुछ काम-धंधे करने पर भी

लोग उन्हें शंका की नजर से देखते है । रोज की मजदूरी करने वाले ﴾जिनका इतने बड़े शहर में कोई नहीं है ।﴿ फुटपाथ पर रहकर ही अपना गुजारा कर लेते है । कब उन्हें कुछ हो जाता है, पता नहीं चलता । इतने बड़े शहर में वे लावारिस की तरह पड़े रहते है । "एक वह" कहानी में इसी तरह की समस्या को बताया गया है ।

जो व्यक्ति महानगर जैसे शहरों में कुछ चापलुसी करके या ऐन गेन तरीकों से कुछ पा भी लेते है । तो वह अपने से निम्न लोगो की तरह देखते भी नहीं है । चाहे वे कभी उनके मित्र रहे हो बल्कि अपनी कुर्सी का रोब जमाते है । हमी तुमको बना बिगाड़ सकते है । ऐसे ही "कहां जाओगे" क0 में गिरधर पांडे अपने मित्र ﴾ जो दिल्ली में एम0पी0 की पदवी पर थे ﴿ के पास अपनी कोई समस्या लेकर गये, यह सोचकर उनकी पहुंच से इनका कार्य सम्पन्न हो जायेगा । लेकिन उनके आते ही एम0पी0 ने उन्हें पहचानने से भी इन्कार कर दिया । याद दिलाने पर वह उन्हें टैक्सी से होटल में लंच लेने के लिये ले गये । वह बेचारा अपना कार्य सम्पन्न कराने के लिये अपने पैसो की आहुति देने लगा । और एम0 पी0 बिना कार्य सुने "कल आना" कहकर उन्हें टाल गये । गिरधारी जी बिना कार्य कराये जबरन सारे पैसों की तिलांजली देते हुए स्वंय को कोसते हुए चले गये । ऐसे एम0 पी0, नेता, मंत्रियों की आज भी कमी नहीं है । ये लोग केवल चुनाव के समय वायदे करते है । बाकी समय तो देखते भी नहीं है । गपशप, सड़क आदि कहानियों में भी इसी दरिद्रता का चित्रण मिलता है ।

मंहगाई की मार ने आम आदमी के चरित्र को तोड़कर रख दिया है । ईमानदार आदमी की जिन्दगी सदैव कष्टों से घिरी रहती है और बेईमान तमाम भौतिक सुविधाओं से लैश होकर प्रतिष्ठित हो गया है । चरित्रवान ईमानदार व्यक्ति समाज में, घर में हर जगह अपमानित होता है । जिसके पास धन है, वही इज्जतदार है । कोई यह नहीं पूछने जाता कि धन कहां से और किस तरह आया ।

इस मंहगाई के जमाने में केवल निम्न वर्ग ही नहीं वरन मध्यम वर्ग को भी तकलीफ होती है । "आदमी तो यों ही परेशान है मंहगाई से, तिस पर ये स्कूल वाले रोज कोई न कोई खर्च का आइटम पेश कर देते है – कभी ताला, कभी कुंजी,

कभी पंखा, कभी पिकनिक, कभी नाटक, कभी टीचर डे, कभी विदाई, कभी किसी की सगाई, कभी लाठी, कभी डंडा और सभी आइटम पेश होते है महीने के तीसरे या चौथे सप्ताह में। बेचारे लड़के घर पैरेंट्स की डांट सहते है और स्कूल में टीचर की। और पढ़ाई के नाम पर कुछ भी नहीं। 30

एक बूढ़ा आदमी अपने हाथ में धूल भरे हुए है। उसमें से कंकड़ और खर-पतवार छांट रहा है। छांटने के बाद उसने वह धूल मुंह में झोंक ली।

"अरे क्या करते हो बाबा। उसने चकित होकर कहा।

बूढ़े ने निस्तेज आंखे उठाकर उसकी ओर देखा, बोला - क्या करता बेटा, चार दिन हो गये, कुछ खाया नहीं। 21

इसमें मिश्र जी ने बहुत विकराल भरी दरिद्रता का उल्लेख किया है। जिसको देखकर हृदय भी दहल जाता है। पता नहीं, कब सबको दो वक्त की रोटी मिलेगी।

6) भ्रष्ट पुलिसवालों की समस्या :-

आज के युग में पुलिस रक्षक के स्थान पर भक्षक होती जा रही है। पुलिस जो जनता की मदद के लिये होती है। वह अब नहीं रही है। चन्द पैसे वाले उन्हें खरीद लेते है। जो लोग गरीब होते है उन्हें ही पुलिस पकड़ कर आंतकित करती है। धनी वर्ग के तो इशारों पर चलती है। वे अपने फर्ज को भूल जाते है।

इसका मरद इंसपेट्र है किसी महकमे में। हरामी रोज हजारों की गड्डी लाता है।

आप ही कौन विद्वमान है। हजार हजार की गड्डी रोज लाते है क्या विद्वमान बनकर। क्या कीजिएगा इतने रुपये बटोर कर। आपकी सोहबत कौन धर्मात्माओं की है। आप लोग भी तो गैंग बनाकर जनता को लूटते है। कोई गरीब आदमी भी रोये-गिड़गिड़ाये तो रहम नहीं। 22

बिना रिश्वत लिये पुलिस वाले रिपोर्ट भी नहीं लिखते है। न ही जांच-पड़ताल ही होती है। तो गरीब व्यक्ति न्याय मांगने के लिये कहां जाये। यहां तक की किसी लड़की की इज्जत की सुरक्षा भी पुलिस वाले नहीं करते है बल्कि उनकी इज्जत भ्रष्ट कर देते है।

मेरी लड़की की जान लेने वाले भेड़ियों को पुलिस नहीं पकड़ती, उल्टे मुझी को फांसने की धमकी दे रही है, मेरी बेटी गयी, इज्जत गयी और अब मेरे ऊपर कलंक लगाया जा रहा है कि मेरे जुल्म से तंग आकर बेटी ने अपनी जान दी है । पुलिस वालों ने उन्हें कमरे में बन्द कर दिया और पीटने लगे औरजब बाबू ने कहीं कुछ न कहने का बचन दिया तो उन्हें छोड़ा गया । 23

जो व्यक्ति केवल रोटी के टुकड़े की चोरी करता है उसे तो पुलिस पकड़ लेती है जो 200 रुपये का पाकेट मार लेता है उसे तो पुलिस कुछ नहीं कहती है ।

सेठ । सारे ग्राहकों के सामने डांडी मारकर चोरी तू करता है, भाव बढ़ा कर चोरी तू करता है । मिलावट करके चोरी करता और तुझे कोई पुलिस नहीं पकड़ती यह भिखारी का बच्चा चोरी करता है । सो उसे पकड़ती है । 24

आजकल की पुलिस स्वंय ही दंगें कराती है । फिर स्वयं तमाशा देखती है । यदि कोई रिपोर्ट करे तो भी उसके लिये जल्दी से कोई कार्यवाही नहीं होती है । जब तक उनको अंदर से आदेश नहीं मिलता है । मंत्री, नेता आदि के इशारों पर पुलिस चलती है । बेगुनाह को भी अंदर कर देती है तथा मुजरिम को ले देकर छोड़ देती है ।

7§ अन्य समस्याएं :-

1§ <u>बिना टिकट यात्रा की समस्या</u> -: मिश्र जी ने बड़े शहरों की छोटी - मोटी सभी समस्याओं को लिया है । जिनके प्रति आम आदमी के लिये ध्यान देना विशेष जरूरी है । अक्सर बस में या ट्रेन में कुछ लोग बिना टिकट के यात्रा करते है । जो सबसे बड़ा जुर्म है । "वैसे लोग है जो बिना टिकट के सफर करते है । ये देश की अर्थ-व्यवस्था को चौपट करते है, इनको कड़ी से कड़ी सजा होनी चाहिये । 25

ये लोग अपने कुछ रुपयों को बचाने के लिये सोचते है । यदि सभी इसी प्रकार से करे तो देश की आर्थिक स्थिति को नुकसान पहुंच सकता है ।

2) <u>शिक्षित वर्ग सम्पन्न होते हुए भी गलत कार्यों को करना</u>-: यदि व्यक्ति पढ़-लिख जाता है तो उसमें विवेक, बुद्धि से कार्य करने की क्षमता होती है। फिर भी वे उसको सदुपयोग करने के बजाय उसका दुरुपयोग करे तो यह बहुत ही शर्मनाक बात है । "बिना दरवाजे का मकान" उप0 में पुजारिन दूध के डिपो से दूध की बोतलें चोरी करती है । तथा उनके बच्चे जो देखने में बहुत ही शिक्षित व नेक लगते है । लड़का राह चलते लड़कियाँ छेड़ता है, जुआ खेलता है । नशा करता है । और लड़की जो बी0 ए0 में पढ़ती है , वह देखने में इतनी सीधी व भली लगती है, वह कालेज में अन्य लड़कियों के पर्स में से चीज़े गायब कर देती है । ऐसे गलत कार्यों को करते हुए भी सुसभ्य रूप से चलते है ।

रघुनाथ मल (जो शिक्षण क्षेत्र से जुड़े हुए है) अपनी तिकड़मों और शराब के व्यापार से काफी पैसे वाला हो गया और यहां के नेताओं, अफसरों आदि की संगति में उठने-बैठने लगा और धीरे-धीरे स्कूल की राजनीति में भी आ गया और आजकल मैनेजर बन गया है टीचरों को शिक्षा देता है, उनको कर्तव्य का पाठ पढ़ाता है । लोगो को महीनों तनखाहें नहीं मिलती, टेम्परेरी है तो टेम्परेरी चल रहे है । काले कारनामों से इसके जीवन के पृष्ठ रंगे पड़े है । गुंडे पालता है, औरतों का व्यापार करता है, कितनी ही हत्याएं इसके गुंडे कर चुके है । <u>26</u>

"दूसरा घर" उप0 में गंगाराम शास्त्री जैसे लोग स्कूल को बनाये रखने के लिये कैसे-कैसे कारनामें करते है । दूसरे के जमीन को जबरन हथिया कर स्कूल खोल देते है । एक पत्नी होते हुए भी दूसरी पत्नी लेकर बैठते है । चुनाव जीतने के लिये कैसे कैसे दंगे फसाद कराते है । अपना प्रचार प्रसार करवाने के लिये अन्य लड़की को भी फंसाते है, लेकिन बीबी को कोई सुख न देकर अन्यत्र देखते रहते है ।

चुनाव वगैरह जीतने के लिये तो आज भी नेता लोग दंगे-फसाद करवाते है । फिर कार्यवाही करते है । हिन्दु-मुस्लिम फूट डालते है । अंग्रेजों की यह नीति करो-मरो की नीति अपना कर अपना उल्लू सीधा करते हैं ।

3) <u>बाढ़ की समस्या</u> -: मिश्र जी गांव में तो बाढ़ की समस्या को पेश किया ही है । इसके साथ ही नगर में आयी हुई बाढ़ का वर्णन करते हुए उसके रोकथाम करने पर व्यंग्य को पेश किया है । सरकारी कार्यवाही का

पर्दाफाश किया है । दिल्ली के माडन टाउन पर बाढ़ आयी हुई थी उसका चित्रण किया गयाहै ।

छापर पर खाट बांधकर बनायी गयी नाव पर तीन मर्द और एक औरत बैठे हुए है । पता नहीं, वे किधर से बहते हुए इधर चले आये है । औरत की गोंद में एक बच्चा है । पता नहीं, किसी चीज से यह नाव टकरायी कि डगमगा गयी और दो आदमी उस पर से नीचे लुढ़क पड़े । लोगों के रस्सियां, धोतियां, लटकायी लेकिन उनकी पकड़ में नहीं आयी और वे डूबते डूबते ताल की ओर चले गये । औरत ने अपनी गोद के बच्चे को देखा-ठंडा हो चुका था, उसे पानी में फेंक दिया । 27

गांव में तो बाढ़ आने पर उसकी रोकथाम ठीक तरीके से नहीं हो पाती है । बांध टूट जाते है । या दूसरे तरीके ठीक प्रकार से नहीं हो पाते लेकिन शहरों में सरकारी व्यवस्था का इंतजाम तो कराया जाता है । लेकिन वह सही माने में कितना सफल रहता है । यह बताया गया है ।

उसने देखा-इन नावों के अतिरिक्त कुछ और नावें भी घूम रही है जिन पर चाय है, डबल रोटी है, दूध के डिब्बे है, पुड़ियां है सब्जियां है, बिसकिट है, कुछ फल है, कुछ नावे तो कुछ खास खास घरों को खोजकर रुक रही है । शायद विभाग के लोग सहायता करने आये है, कुछ समाज-सेवी संस्थाओं और सरकार की नावें है, अच्छा मेला हुआ है - जल मेला। बहुत रौनक हो रही है । 28

सरकार की तरफ से बाढ़ से घिरे लोगों की जान-माल की रक्षा और भोजन व्यवस्था के नामपर जो कुछ भी होपाता है, वह बहुत ही कम और नगण्य होता है । सरकारी संस्थाओं के लोग बाढ़ के नाम पर अच्छा माल तो स्वयं हजम कर जाते है । जनता को केवल आश्वासन दिया जाता है । उनकी सुरक्षा का पूरा पूरा ध्यान दिया जायेगा । लेकिन हकीकत में ऐसा कुछ होता नहीं है । सरकारी कथनी-करनी में बहुत फर्क है । कुछ लोग मेले की रौनक देखने के कारण भी आये हुए है । इस प्रकार मिश्र जी ने सरकारी व्यवस्था करने वालों पर व्यंग्य किया है ।

नारी समस्या :-

मानव सभ्यता के विकास के साथ साथ जहां मनुष्य दिनोंदिन प्रकृति पर अपनी प्रभुता स्थापित करता आया है । वहीं पुरूष भी नारी को अपने मन बहलाव के लिये अपनी बंदिनी बनाता आया है । पिता पुत्री पर, पति पत्नी पर, भाई बहन पर और पुत्र मां पर अपने अधिकार का प्रयोग सदा से करता आ रहा है । सृष्टि के लिये नर और नारी दोनों का योगदान प्रकृति और पुरूष के समान बराबर है । यह तथ्य सर्वविदित है । फिर भी दोनों एक दूसरे पर अपने अधिकार की चेष्टा करते आये है । नारी प्यार और त्याग से पुरूष का हृदय जीतना चाहती है और पुरूष अपने पौरूष से उसके तन मन पर अपना अधिकार जमाना चाहता है । नारी मन की शक्ति असीम है । इसलिये उस पर पुरूष का वश भले न चले पर उसके तन पर बलात् अधिकार करना तो पुरूष के लिय सदैव संभव रहा है , शायद इसीलिये नारी को अबला कहा गया है । 29

रामदरश मिश्र की नारी न तो प्रसाद की श्रद्धा है न गुप्तजी की अबला, न वह ईर्ष्या की प्रतिमूर्ति है, न नारी स्वातंत्र्य की झंडा बरदार । वह शक्ति का प्रलयकारी रूप भी नहीं है, न मात्र भोग्या । 30 तो रामदरश जी ने नारी के किस पहलू का वर्णन किया है ।कहीं उनकी नारी पुरूष के पौरूष से दबती हुई अत्याचार को सहन करती दिखायी गयी है । कहीं उनकी नारी जुर्म के खिलाफ आवाज उठाती हुई फन फुंकारती हुई दिखायी देती है । संघर्षरत दिखायी गयी है । कहीं ममतामयी मां का रूप दिखाया गया है । कहीं प्रेयसी तथा कहीं गृहणी के रूप में दिखायी गयी है ।

मिश्र जी ने अपने समय में नारी पर होने वाले अत्याचारों को देखा और उनसे पीड़ित स्थिति को देखकर वे व्यथित हो जाते है । उनके मन में भावनाएं उथल-पुथल हो उठती थी । जब तक वे उन्हें प्रस्तुत नहीं कर देते थे । तब तक बेचैन रहते थे ।

नारी को कुछ संस्करण तो उसे बचपन से दिये जाते है । कि वह लड़की है । यह जानकर उसे सबकुछ सहन करते हुए चलना चाहिये । लड़की कहानी में लड़की के

साथ उसकी मां ही भेदभाव करती है । वह बेचारी सबकुछ सहन करती जाती है ।

तुम्हें बुरा नहीं लगता ।

क्या, दादा जी ?

अरे यही, जो कुछ तुम्हारे साथ होता है ।

उसने इन्कार में सिर हिलाया ।

क्यों ?

लड़की हूं न ? 31

इसी प्रकार "बेला मर गयी" उप0 में बेला के पति उससे उम्र में छोटे होते हुए भी अपने जूते से उसे मारते है । पति चाहे कैसा भी हो किन्तु उसे युग युग से यह संस्कार पिलाया गया है कि वह एक नारी का पति है यानि उसका अधिकारी । और नारी चाहे जितनी भी उपलब्धियाँ प्राप्त कर ले किन्तु वह एक अधिकारी पुरूष की अधिकृत पत्नी है, पुरूष कुछ भी हो उसका सौभाग्य है और सौभाग्य ही नारी का सर्वस्व है । यह संस्कार बोध उसे चिरन्तन काल से मिला है - वह कहां जा सकता है ? तो बेला के पति का जूते से मारना अजीब नहीं था । 32

कहीं तो वे नारियां है जो परम्परागत रूढ़ियों के मोहजाल को ओढ़े अत्याचारों से आहत तन और मन के बावजूद पति परमेश्वर की दासता करते हुए मर जाने में ही अपने जीवन की सार्थकता समझती है । दूसरी ओर वे, जो यातनाओं के प्रति सजग होते हुए भी समाजिक, लोकलाज, नियमों तथा मर्यादाओं के अंकुश के कारण घुट-घुटकर अपने जीवन को निःशेष कर देती है । समाजिक बंधन उनके लिये इतने कठोर है । नियमों का जाल इतना पेचीदा है कि पुरूष वर्ग की सारी अनैतिका को लक्ष्य करते हुए भी उसके संरक्षण का तिरस्कार वे इसी कारण नहीं कर पाती कि अंततः उन्हें इसी समाज में जीना और मरना है । जिससे नारी की नियति को युग युग से पुरूष के धर्म स्वेच्छाचारों तथा न्याय आदि के खूंटे से बांध दिया है ।

मिश्रजीने समाज में नारी के मध्यम वर्ग चाहे उसमें अशिक्षित, शिक्षित दोनों वर्गों को लिया है । नारी पर होने वाले अत्याचारों को उन्होंने तीन श्रेणियों में विभाजित किया है ।

1) पति द्वारा होने वाला अत्याचार

2) परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा पीड़ित

3) समाज द्वारा तिरस्कृत नारी

1) <u>पति द्वारा होने वाला अत्याचार</u> : जो नारी एक नये पुरुष को जन्म देती है। उसे पाल-पोस कर बड़ा करती है। वहीं पुरुष के अत्याचार का शिकार हो रही है। नारी की इस दुखद स्थिति के लिये जिम्मेदार कौन है। इस प्रश्न का उत्तर दो टूक शब्दों में यही कहा जा सकता है कि पुरुष प्रधान समाज ने नारी को जीवन के हर क्षेत्र में शोषित किया है। शोषित वहीं होता है। जो कमजोर है पुरुष की तुलना में नारी में ये दोनों शक्तियां कम है।

नारी जीवन की यह विडम्बना है कि उसने भारत जैसे अनेक पुत्रों को जन्म तो दिया लेकिन बदले में उसे पुरुष ने क्या दिया। तिरस्कार, अपमान और कदम कदम पर उसका शोषण। "दूसरा घर" उप0 में नारी के शोषण का वीभत्स रूप देखने को मिलता है। बहादुर अपनी पत्नी पर आये दिन शराब पीकर उसे पीटता रहता है। रोज अत्याचार सहन करते करते एक दिन वह भी उबल पड़ती है।

सारी तनखाह शराब में उड़ा डालता है। मेरे सारे गहने भी बेच डाले। घर के भीतर बच्चे उपास पर उपास करते है। और यह खस्सी की कलेजी खाता है, शराब पीता है। बच्चों का पेट पालने के लिये इधर मैंने मेहनत मजूरी शुरू की तो कहता है कि तू घूमघूमकर रंडीगीरी करती है। रंडी भी बनाता है और उसी रंडीगीरी के पैसे पाने के लिये लार टपकाता है, मांगता है और छीन लेता है। <u>33</u>

गंगाराम शास्त्री की गांव में एक पत्नी होते हुए भी वह शहर में आकर दूसरी से शादी कर लेता है। लेकिन फिर जब वह नेता बन जाता है। तब इसको भी भला-बुरा कहकर तीसरी लड़की पर आशिक हो जाता है। ऐसे आदमी न जाने कितनी लड़कियों की जिन्दगी बर्बाद करते रहते है।

इसी प्रकार "अपने लोग" उप0 में भी डा0 सूर्य कुमार भी अपनी पत्नी के होते हुए भी स्वंय हर समय लड़कियों से घिरे रहते है। अपनी पत्नी को मारते व पीटते रहते है। दूसरे, फुलवा का पति शराब के नशे में अपनी पत्नी को मारता रहता है। दोनों में क्या फर्क है, दोनों ही गलत आचरण करते है तथा पत्नियों को पिटते रहते है, जबकि सूर्य कुमार नामी व प्रतिष्ठावान व्यक्ति है,

इसीलिये वह ऊबा हुआ है ।

"लाल हथेलियां" बदलियां"आखिरी चिठ्ठी, "बैला मर गयी" "एक अधूरी कहानी", "एक वह" "वह औरत" अकेला मकान आदि कहानियां नारी के उत्पीड़न व अत्याचारों से भरी हुई है ।

"वह" औरत" क0 व "अकेली वह" कहानी में नारी अपने पति द्वारा पीड़ित होती है । वे एक पत्नी के होते हुए भी दूसरी पत्नी को ले आते है । फिर स्वाभाविकता से बोल देते है - मैंने दूसरी औरत रख ली है, तुझे मेरे साथ रहना हो तो रह, नहीं तो कहीं और चली जा । तेरे में क्या है - न रूप, न रंग, न बाप के यहां से दहेज ही लेकर आयी। 35

इन कहानियां में नारी तन, मन से समर्पित होते हुए भी पुरूष का मन नहीं जीत सकती है । पुरूष उनकी सादगी का फायदा उठाकर उन्हें हर तरीके से पीड़ित करता रहता है वह चुपचाप अपना कर्तव्य निभाती हुई अपना सर्वस्व न्यौछावर करती हुई समर्पित होती चली जाती है । कठोर हृदय पुरूष यौवन सौंदर्य आकर्षण के कारण भौरे की तरह अन्यत्र चक्कर लगाते रहते है । फिर भी दोष स्त्री को ही देते है । जबकि स्त्री पुरूष की सदा से अनुगामिनी रही है । पुरूष के उन्नत शिखर पर पहुंचाने के कार्य में स्त्री का हाथ रहा है । "अकेला मकान" में भी बुआ को उसके पति ने छोड़कर दूसरी शादी कर ली थी । फिर भी वह बिना कुछ शिकवा-शिकायत के सब कुछ स्वीकार कर लेती है । जबकि उसके पति उसकी तरफ कभी ध्यान भी नहीं देते थे । वह उनका मंगल कामना करती हुई अपना जीवन गुजार लेती है फिर भी बुआ ही उनके बुरे दिनों में भी उसकी मदद करती है । वह अपने आप को व्यस्त रखने के लिये स्वंय को समाजिक कार्यो में लगा देती है । इस पर भी वे उसे शक की नजर से देखते है । पुरूष स्वयं चाहे कुछ भी क्यों न करे, उसके लिये माफ है । कलंकित स्त्री ही होती है । मानव सृष्टि के अटूट क्रम के निर्वाह का श्रेय नर और नारी दोनों को है । जीवन शक्ति इन दोनों तत्वों के योग में निहित है । सृजन एवं पालन के गुरू कर्तव्य भार ने उसे अपूर्व स्निग्धता, सहन शक्ति और कर्तव्य बोध से युक्त कर दिया, फिर भी अबला नारी को यातनाएं भोगनी पड़ती है । केवल मध्यम वर्ग की नारियां ही पुरूष के अत्याचारों का शिकार नहीं होती है । बल्कि पढ़ी पढ़ी

शिक्षित नारी भी इससे पीड़ित होती है । "रात का सफर" ऐसा ही मिश्र जी द्वारा लिखित उपन्यास है । जिसमें शिक्षित नारियाँ भी उसी रूढ़िवादी संस्कारों को ढोती तथा पुरूष की दासता स्वीकार करती हुई, अपने को मिटाती हुई दिखायी गयी है । इस उप० में ऋतु एम० ए० पास होते हुए भी केवल अपने पति का प्यार पाने के लिये 8 साल तक इंतजार करती है । न चाहते हुए भी वह इसके लिये सब कुछ सहन करती जाती हैं । लेकिन उसका पति उसके साथ उपेक्षा का बर्ताव करता है । वह उससे शादी करके उसको ससुराल में छोड़ कर अन्यत्र लड़की के साथ निर्वाह करता है । यह सब जानते हुए भी ऋतु अपने पति को स्वीकार करना चाहती है । लेकिन उसका डा० पति उसकी तरफ देखता भी नहीं है । वह वहां पर दूसरी लड़की नर्स के साथ सम्बन्ध स्थापित करके बैठा था। लेकिन परिवार के दबाव के कारण उससे शादी न करके ऋतु के साथ करके उसका जीवन बर्बाद करते है । इसी प्रकार बीना पाँडे का पति भी कालेज में लेक्चरर होने पर फिर सम्पादक बनने के बाद, उसको बच्चों समेत छोड़ कर एक दूसरी लेखिका के साथ घर बसा लेते है । वह बेचारी केवल रोती-बिलखती ही रह जाती है ।

"आखिरी चिट्ठि" कहानी में प्रभा भी शिक्षित होते हुए सब कुछ ढोने पर विवश थी, वह उसे नियति मानती है ।

और कहूं कि क्या इस खूसट बुढ़िया और इस छिछोरी बहन के लिये मुझे ब्याहकर लाये थे । लेकिन कैसे कहती यह ? वे मेरे पूज्य पति हैं, स्वामी है, लोग और शास्त्र दोनों इनकी और इनकी मां की पूजा करने को कहते है । 35

एक दिन सहते सहते वह अपने को होम कर देती है । नारी के प्रति जो परम्परागत दृष्टिकोण है । वह नारी को पुरूष की अनुगामिनी, सेव्या, भोग्या के रूप में ही देखता है । पुरूष इसे भोगता ही जाता है । उसने पुरूष की दुनिया में लात-मुक्का, बदनामी, भूख, घृणा के अलावा क्या पाया । लेकिन अब वह जमाना नहीं रहा । महाभारत की द्रौपदी की भांति अब नारियां अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो रही है । वह भी पुरूष के समान कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है । वह पढ़ लिख कर सचेत हो गयी है तथा पति के अत्याचारों के विरूद्ध विद्रोह करती हुई अपने अधिकारों, व स्वतंत्रता की सुरक्षा करती हुई आगे बढ़ रही है ।

वर्तमान युग में नारी प्रतिष्ठा की दिशा में नारी का भी संपूर्ण सहयोग है । पुरूष की तरह नारी में भी समाज के परम्परागत स्वरूप के प्रति विद्रोह की भावना विद्यमान है । स्त्री को सदैव पुरूष की भोग्या, दासी एवं अनुगामिनी समझा गया किन्तु समाजिक जागृति, नारी आंदोलन, शिक्षा, पाश्चात्य प्रभाव तथा स्वाधीनता की भावना के परिणाम स्वरूप स्त्री सम्बन्धी परंपरित मूल्यों से बदलाव आया । इस क्षेत्र में स्त्री ने ही अगुआ बनकर दकियानुसी मुल्यों से डटकर टक्कर ली ।

आधुनिक समाज में नारी को पुरूष के समान अवसर एवं स्थान मिलने लगा है । वह अब अपने स्वतंत्र अस्तित्व के प्रति भी सतर्क है । आज स्त्री स्वालंबी होकर अपना मार्ग खुद चुनने लगी है । वह अब पुरूष के आगे अपने को हीन अनुभव नहीं करती । नवयुगीन नारी अपने प्रति समाज में दीर्घकाल से चली आ रही मान्यताओं का नाश करने के लिये सचेष्ट हो गयी है । वह अपने जीवन के महत्वपूर्ण एवं नाजुक मोड़ पर खुद निर्णय कर लेती है । वह पुरूष के आगे अपना अपमान नहीं सहन कर सकती है । वह पुरूष के दर्प के आगे क्यों झुके, उसकी भी अपनी कोई मंजिल है, वह भी चाहे जिस ढंग से जी सकती है । जबकि स्त्री और पुरूष समाज के दो पहलू है । एक के बिना दूसरे का कोई अस्तिव नहीं है तो भी समाज पुरूष को प्रधान क्यों मानता है । जबकि नारी का भी उसमें उतना ही सहयोग होना चाहिये ।

मिश्र जी ने ऐसी ही एक कहानी "एक भटकी हुई मुलाकात" में पतित्यक्तता नारी के स्वाभिमानी रूप का वर्णन किया है । अंजना का अपने पति से तलाक हो गया था तथा उसका बच्चा भी कानूनन उसके पति को मिला था । "यह पुरूष का कानुन है, यह स्वतंत्र देश का कानुन है कि बच्चा पैदा करे मां और अधिकारी हो जाये बाप । संवेदनाओं का मूल्य त्याग में है । मां अपनी सारी संवेदनाएं चूह-चूह कर अपने पुत्र का निर्माण करती है । अपने पास वह क्या रखती है । लेकिन वही पुत्र न्याय के समय पिता का हो जाता है । 36

लेकिन जब वह अपने बेटे को पालने के लिये स्वावलंबी बनाने तक अपने पास रखने के लिये कहती है तो वह कहता है । "तुम इसकी कोई नहीं हो । केवल

पैदा करने की मशीन हो ।" तब उसके स्वाभिमान पर बहुत ही ठेस पहुंचती है । वह उसे तुरंत ही सौंप देती है । और स्वंय स्वतंत्रता पूर्वक जीवन व्यतीत करती है । क्या समझ रखा है तुमने मुझे ? एक निस्पंद जड़ पदार्थ, जो तुम्हारी उस गोहरजान की लम्पटता की छाया में चुपचाप पड़ी रहूंगी । और सुनों, मैं चाहूं तो तुम्हें तलाक न देकर तुम्हें नचा सकती हूं किन्तु वह भी नहीं करूंगी । अब तुम्हारी पत्नी कहलाने में भी मुझे अपमान लगता है । 37

इसी तरह "रात का सफर" उप0 में भी ऋतु अपने पति की उपेक्षा भाव को सहन करते करते जब थक जाती है तब उसका स्वाभिमान पति के प्रति विद्रोह करने पर मजबुर करता है । वह सबके सामने अपने पति के गाल पर तमाचा मारकर अपने विक्षोभका बदला ले लेती है ।

पुरूष चाहे एक स्त्री के होते ही चाहे कितनों से सम्बन्ध बनाये रखे तो वह जायज माना जाता है । यदि स्त्री एक पति के होते हुए अन्यत्र पुरूष के साथ बात भी करे तो उसको संदेह की दृष्टि से देखा जाता है । उसको व्याभिचारी व कलंकित किया जाता है ।

एक बार शादी हो जाने पर स्त्री पर एक ठप्पा लग जाता है । पुरूष ताजा माल चाहता है, वह चाहे स्वयं कितना ही बासी क्यों न हो गया हो । वह अपने को इसका जन्मजात अधिकारी समझता है । वह स्त्री पर एक विवाह का ठप्पा देखकर उससे भाग खड़ा होता है, उसके साथ इश्क लड़ा सकता है, शायद उसे दुखी समझकर उसके सूनेपन को भरने के करूणा भाव से उसे साहचर्य की गर्मी देना चाहता है । किन्तु विवाह के नाम पर धीरे से खिसक जाता है । 38

आज जमाना बदल गया है । जिस प्रकार का अधिकार पुरूषों को दिया जाता है । उसी प्रकार के अधिकार नारी भी चाहती है । वह कोई गुड़िया का खिलौना बनकर रहना नहीं चाहती जिसको जिधर चाहे वैसा चाहे ढाल दे । वह मर्दों की भांति मर्द बनकर सुरक्षित रूप से स्वतंत्र होकर जीना चाहती है । आज की नारियां केवल घर में ही गृहणी, पत्नी या मां बनकर नहीं जीना चाहती है । बल्कि इसके साथ ही वह अपने लिये कुछ बनना चाहती है, कुछ करना चाहती है । वे दफ्तर में कार्य करके अपनी गृहस्थी को बोझ हल्का करने में मदद करती है । अतः नारी को दुतकारने के बदले उससे प्यार व हमदर्दी से बहुत कुछ हासिल किया जा सकता है । यह देवी के समान कोमल तथा चंडिका के समान कर्कश रूप धारण कर

लेती है । मिश्र जी नारी के प्रति विशेष श्रद्धा, व सहानुभूति, आदर प्रकट करते है । पाश्चात्य सभ्यता की तरह उच्छृंखला अत्यधिक व्यवहार को पसन्द नहीं करते है । विदेशों की नारी मुक्ति आन्दोलन के विरोधी थे । वे अपने को नारी सीमित दृष्टि शालीनता, सच्चरित्रता तक रखना चाहते है ।

2) परिवार के सदस्यों द्वारा पीड़ित -:

नारी पर केवल पति ही अत्याचार नहीं करता वरन् परिवार में सास, ननद, जिठानी आदि लोगो द्वारा अत्याचार होते है । दहेज के अभाव में सास बहू पर ज्यादा पीड़ित करती है । अक्सर टी0वी0 पर, अखबार में यह रोज सुनने को मिलता है । कि फलां की बहू को आग लगा कर जला दिया । या किसी ने ऊपर से कूद कर अपनी जान दे दी, जीने की किसको इच्छा नहीं होती है । लेकिन जब जुर्म हद से ज्यादा हो, और सहन शक्ति न होतो मनुष्य मृत्यु को गले लगाने के लिये विवश हो जाता है । औरत की सबसे बड़ी शत्रु औरत ही होती है, वही दूसरी औरत का हक छीनती है, वही चारों ओर उसकी बदनामी करती है, रस ले-लेकर उसके भीतर से कुरूपता के काल्पनिक स्तर उभारती है और चौपालो मेंउसके जरिये अपना निकम्मा समय रंगीन बनाती है । कभी सास बनकर, कभी ननद बनकर, कभी बुआ बनकर, कभी बहू बनकर वह दूसरी औरत पर चोट करती है और मौत के मुंह में ढकेल देती है । 39

"रात के सफर" उप0 में ऋतु अपने ससुराल में अपने पति की उपेक्षा के साथ-साथ परिवार वालों द्वारा भी पीड़ित की जाती है । उसकी ननंद तो हर समय उनकी बॉडीगार्ड बनी रहती है । वह न तो उसके सामने हंस सकती थी और न रो सकती है । सारा दिन घर का काम-काज में ही व्यस्त रहती थी । किसी से कोई शिकवा-शिकायत नहीं ।

"बिना दरवाजे का मकान" उप0 में दीपा, "जल टूटता हुआ में बदमी, पानी के प्राचीर उप0 में पारबती, आखिरी चिठ्ठी में किमा, "अकेला मकान" क0 में बुआ जी आदि अपने ससुराल में किसी न प्रकार से पीड़ित होती बतायी गयी है । कहीं पर दहेज कम मिलने की वजह से कहीं पर संतान न होने की वजह से, कहीं पर लड़की

पैदा होने की वजह से तो कहीं सुन्दर न होने की वजह से उन्हे उलाहने दिये जाते या पीड़ित किया जाता है । इसमें उस बेचारी का क्या दोष ? ननदें जो स्वयं दूसरे के घर जायेगी वे भी अपनी मां को भड़का कर आग में घी डालने का कार्य करती है । इस तरह नारी जुर्म की चक्की में पिसती ही चली जाती है ।

"डर", "वह औरत ", अपने लिये" आदि इन कहानियों में गरीबी के कारण, दहेज न मिल सकने के कारण बहू को जिंदा जला दिया जाता है । और वह बेचारी चीखती-चिल्लाती ही रह जाती है । "अपने लिये" कं0 में गरीबी के कारण उसकी शादी किसी पागल लड़के से कर देते है ।

आखिर गरीब घर कीलड़की क्या औकात ? आप लोगों ने सोचा कि एक लड़की इनके गले बांध दो, शायद पागलपन ठीक हो जाये । हम लड़कियों की अपनी औकात क्या होती है । हम तो पुरूषों का इलाज करने के लिये निर्जीदा दवाएं है । 50

इसके अलावा कुछ ऐसी लड़कियां भी होती है । जो ससुराल में तो पीसती ही है लेकिन मायके में भी उन पर अत्याचार होते है, उनके साथ भेदभाव होतीहै । या परिवार के किसी अभाव ग्रस्त अंश की पूर्ति के लिये उन्हें अपनी आकांक्षाओं की आहुति देनी पड़ती है । "लड़की" कहानी में लड़की के साथ भेदभाव करके उसे निम्नवर्ग का भोजन दिया जाता है तथा उसकी हर इच्छा, आकांक्षा का गला घोंटने वाली दूसरा ओर कोई नहीं वरन् उसकी मां ही थी । इसी तरह "हद से हद तक" व "मुक्ति" कहानियों में परिवार द्वारा शोषण किया जाता है । "हद से हद तक" कहानी में बाप को धन्ना सेठ बनने की इच्छा थी, जिसके लिये वह अपनी बीबी व बेटियों को मशीन बनाकर उन्हें हर समय उसमें जोतते रहते है । उनकी एक बेटी इस कार्य में नहीं जुतना चाहती थी, वह इसका विरोध करती थी । "इसके लिये उसे पीटा और बाप से कहा । फिर क्या था- उसे बांधा गया और जानवर की तरह पीटा गया । बार-बार पीटा गया । भरपेट खाना न उसे मिलता था, न मां को । फिर आये दिन पिटाई ऊपर से होती थी । मां बोलती थी तो उसे भी घसीटकर मारा जाता था । उसे भी भूखा रखा जाता था । 51

"मुक्ति" कहानी में बाप मकान बनवाना चाहता था जिसके लिये वह अपनी सभी बेटियों को टाइपराइटर, चरखे तथा बुनाई आदि के कार्यों में लगा देते है। लड़कियाँ दिन-रात कार्य करके मशीन की तरह बन गयी थी। उसमें एक लड़की को तो टी0 बी0 भी हो गया था। आदमी को मकान जरूर चाहिये चाहे वह रहे या न रहे। यह सब देखकर उनकी छोटी लड़की चन्दा इन सब का विरोध करती है। तो उसे खाना नहीं दिया जाता था। पहले काम, फिर खाना। काम न करने पर उसे पीटा भी जाता था।

इस प्रकार इन दोनों कहानियों की लड़कियां विरोध करते सहते एक दिन घर छोड़ कर भाग जाती है।

"अपने लिये" कहानी में सौतेली मां के आ जाने से वह अपने लड़के व सौतेली लड़कियों में भेदभाव रखती है। उनको हर समय भला-बुरा भी कहती रहती है। लड़की की जाति को अपनी औकात पहचाननी चाहिये। लड़के-लड़की में अंतर रहता है, रहेगा ही। कल पराये घर जायेंगी तो ऐसे ही मरद से साड़ा-तोड़ी करेगी ? लड़की जाति को अपनी इच्छा मारकर रखनी पड़ती है। 42

आज तो यह समस्या और भी भयंकर रूप धारण किये हुए है। क्योंकि कुछ लोगों ने दहेज को तो एक प्रकार से व्यापार बना दिया है वह दहेज लेने की लालच में एक जीती-जागती अबला को मौत के मुंह में झोंकते है। और स्वयं ऐशो-आराम करते है। फिर एक बीबी के मर जाने पर दूसरी शादी करके उससे दहेज ऐंठते है। जिससे बेचारे गरीब लोगों को बहुत यातनाएं सहन करनी पड़ती है। जिनके यहां पर ज्यादा लड़कियां होती है। और दहेज देने की असमर्थता होती है। उनको न चाहते हुए मजबूरन लड़कियों की इस प्रकार बलि देनी पड़ती है। जब तक पुरूष इस बात का विरोध नहीं करेंगे तब तक यह स्थिति बनी रहेगी। मिश्र जी इस समस्या को रखकर उसके निराकरण के लिये जागृति पैदा करना चाहते है जिससे यह समस्या समाप्त हो जायें।

3) <u>समाज द्वारा तिरस्कृत नारी</u> -:

नारी जो कभी श्रद्धा की देवी मानी जाती थी। वहीं समाज द्वारा तिरस्कृत की जाती है। समाज की लोलुप नजरें उसको सुरक्षित रूप से जीना

दुभर कर देती है । जब तक वह किसी पर आश्रित है । तब तक तो ठीक है । लेकिन अकेली रहकर हर समय उसे अपनी इज्जत बचाने का खतरा बना रहता है । आज के आधुनिक युग में नारी कहां से कहां पहुंच गयी है । लेकिन अपनी सुरक्षा के मामले में अभी भी वह अबला हैं । बड़े-बड़े महानगरों में तो रास्ते चलते लड़कियों, औरतों को उठा ले जाते है । उन्हें कोई कुछ नहीं कहता है । फिर भी निन्दा नारी जाति की होती है । इसमें उस बेचारी का क्या दोष ?

यहां तो दिन दहाड़े चोर-उचक्के घूमते रहते है । शाम होते ही जंगले में से झांकने लगते है । हम लोग दिन डूबते ही किवाड़े बंद करके दुबक जाते है । दिन को भी कहां हिफाजत है । दिन को मरद अपने अपने आफिस चले जाते है । बच जाती है औरते अब भला बताओं उन्हें लूटने में कितनी देर लगती है । 43

किसी की मजबुरी व असहयता का फायदा उठाकर वह नीचता पे उतरते देर नहीं करते है । "बिना दरवाजे के मकान" उप० में दीधा के पति के अपाहिज होने पर दीधा पेट की खातिर दूसरों के घर चौका बर्तन का काम करती थी । उसकी गरीबी व मर्द की असहयता को मध्य नजर रखते हुए उन शरीफ घरों के मर्द भी दीधा के आगे पैसे फेंक कर उसको पाने की लालसा करते है । लेकिन न जाने वह कैसे आपने आप को बचते-बचाते बैटे की खातिर काम पर जाती है । नित्य प्रति ऐसी अनेक घटनाओं का शिकार उसे होना पड़ता है ।

इसी प्रकार "एक औरत एक जिन्दगी" में भवानी के पति के मर जाने पर उसके अकेले रह जाने पर उसकी सहायता करने के बजाय गांव का जमींदार थोड़े से खेत बोने के बदले में उस पर लोलुप दृष्टि रखता है । फिर फसल तैयार होने के बाद उसके द्वारा इनकार करने पर वह उसके खेत जला देते है । वह अकेली असहाय नारी होने के कारण ही यह चुपचाप सहन करती है । क्योंकि न्याय करने वाले भी पुरूष प्रधान समाज है जो औरत की कमजोरी का फायदा उठाता है । " पानी के प्राचीर" उप० में भी शामधारी की मृत्यु हो जाने पर उसकी पत्नी , गुलाबों का गांव में रहना दुर्भर हो जाता है । यहां तक कि उसके रिश्ते-नाते वाले उसकी मद्द करने के बजाय हर समय उसको पाने के लिये नजरें गड़ाये रहते है । बिंदिया चमारिन होने पर भी सभी उसे हसरत भरी नजरों से देखते है ।

स्त्री के लिये अत्यधिक सुन्दर होना या कुरूप होना दोनों ही अभिशाप है। यदि वह सुन्दर नहीं है तो भी उससे शादी करने के लिये समस्या है। यदि वह अत्यन्त सुन्दर है तो भी उसके लिये घर से निकलना, जीना हराम हो जाता है। हर समय समाज की लालयित घूरती आंखो का सामना करना पड़ता है। आधुनिक युग में संपूर्ण शिष्ट वर्ग सौंदर्य प्रेमी दीखता है। भले ही सौंदर्य गुण हीन हो। आजकल के लड़के भौतिक साधनों से लदी फैशन परस्त मॉडल लड़की को ही तलाशते है। "लाल हथेलियां" कहानी में इसी को संकेतित किया गया है। "बेला मर गयी" कहानी में बेला के सुन्दर होने के कारण गांव में उसकी शादी की ज्यादा चर्चा थी, "एक अधूरी कहानी" में भऊजी के सुन्दर होने पर उसे न जाने किस किसका शिकार होना पड़ता है दरअसल तुम्हारे जैसी सुन्दर स्त्री उसी आदमी के साथ शोभा देती है जिसके पास पैसा हो, जवानी हो, नाम हो। मेरे पास सब कुछ है। 45

सुन्दर स्त्री एक की पत्नी होते हुए भी अनेकों की नजरों की शिकार बनती है। इधर खाई, उधर कुंआ यही उनकी दशा है। जब भऊजी अपना बचाव करने के उद्देश्य से कलपू का खून कर देती है। तब सोनार भी उसको इस हाल में छोड़ कर चला जाता है। वकील व सरकारी गवाह उससे सबके सामने इस प्रकार के प्रश्न पूछते है। जिसको सुनकर नारी जाति लज्जा से झुक जाती है। फिर भी वे पुरूष कलपू जैसे आदमी के लिये कुछ नहीं कहती है। उसके लिये सारा दोष भऊजी पर डाला जाता है। कि यही इसका पेशा है। यह बदचलन औरत है।

इस प्रकार हम निष्कर्ष रूप से कह सकते है कि नारी जीवन आरम्भ से अंत तक अनेक समस्याओं से आच्छादित है। उसके पग-पग पर समस्या जटिल रूप से खड़ी है। मानों उनका जन्म ही इन समस्याओं के समाधान करने के हेतु हुआ हो। मिश्र जी ने नारी जीवन को करीब से देखा है। उसकी जटिलता को परखा है। तभी तो स्वाभाविक रूप से अपने कथा साहित्य में ये समस्याएं उठायी है।

यौन समस्या :-

भारतीय समाज ने नारी को खुली हवा में सांस लेने की छूट तो अवश्य दे दी किन्तु नारी शरीर के साथ नैतिकता का एक खौफ जोड़ दिया गया है। जो

पुरूष शरीर के साथ कभी नहीं जोड़ा गया । जी यौनाचार के समर्थक नहीं है किन्तु वे यौन सम्बन्धों को पुरानी दृष्टि से भी नहीं देखते । मनुष्य की देह की भूख को उन्होंने अत्यन्त स्वाभाविक माना है । उनके उपन्यासों में यह भी दिखाई पड़ता है कि नारी के इस पतन के लिये वे कहीं न कहीं पुरूष को दोषी मानते है । पुरूष नारी शरीर का अधिक भूखा है और साथ ही नारी की भूख का फायदा उठाने में यह सिद्ध हस्ता खिलाड़ी भी है ।

"एक अधूरी कहानी" में भउजी के पति सात वर्ष से सिंगापुर गये हुए थे । भउजी तो किसी तरह उन्हें याद करके जीवन बिता देती है । लेकिन उनका जेठ उन्हें उकसा-कर बताता कि उसके पति वहां दूसरी बर्मिन रख ली है । फिर वह क्यों अपनी सुन्दर शरीर को याद कर करके नष्ट कर रही है । इस तरह उसे बहका-कर नरक में ढकेल देता है । गर्भवती होने पर जब वह उसे अपनाने को कहती है तब वह इन्कार कर देता है । तब वह सोचती है यदि उसके पति जब वापिस आ जायेगें तो क्या वे उसे अपनायेगें तब वह न इधर की रहेगी, न उधर की, इसी शर्म के कारण वह अपने जेठ के दोस्त सोनार के साथ भाग जाती है । जो बाद में उस पर शक की नजर से देखता और मारता-पिटता था औरत एक बार गिरती है तो गिरती ही चली जाती है फिर उसका उबार नहीं हो सकता । "औरत का लोगन जाने क्यों और बहुत कुछ समझते है, औरत नहीं समझते । और जब वह औरत की भूख में परेशान होकर कुछ कर गुजरती है, तब लोग उसे बदनाम करते है । उसे छिनाल कहते है, वेश्या कहते है और एक बार जो औरत बदनाम हुई वह जीवन भर उबा नहीं पाती, मर्द चाहे जो भी करता रहे वह हमेशा गंगा जल की तरह पवित्र रहता है । 43.

पुरूष तो बाहर बहुत कुछ कर लेते है । वे अपनी भूख प्यास मिटाने के साधन खोज लेते है किन्तु स्त्रियां घरों में घुटती है और उन्हें किसी से हंसकर बोलने का भी अधिकार नहीं होता । नैतिकता केवल उन्हीं के हिस्से में डाली गयी है । जो अभाव वे झेलती है, वे तो झेलती ही है, परोक्ष या अज्ञय भय भी उन्हें सताता रहता है । 44

नारी के शरीर धर्म को इतना अनैतिक, इतना उपेक्षणीय क्यों मान लिया गया है ? अभाव को मन की ही सीमा तक क्यों सीमित कर दिया गया है ? पुरूषों के सारे

वेद-शास्त्र, कायदे-कानून, थाना-कचहरी नारी के भोग-धर्म के खिलाफ क्यों अपनी उंगली उठाये घूमते है ? पुरुष के शरीर धर्म को तो कोई भी लाँछित नहीं करता । 47

इसी तरह प्रतीक्षा, हद से हद तक, तथा मुक्ति कहानियां में नारी की अतृप्त भावना का उजागर किया है कि वे भी अपनी तरफ से यौन बुभुक्षा की पूर्ति चाहती है । घर वालों की उपेक्षा व अवहेलना के कारण वे क्यों अपना मन मारे, उनकी भी कुछ इच्छा होती है और वह अपनी जवानी को इस तरह व्यर्थ नहीं बिताना चाहती है ।

उसे इच्छा थी, एक जिंदगी जीने की,औरत की तमाम इच्छाओं के साथ जीने की । बाप और बहन उसे किसी काम पर लगाते तो वह थोड़ा बहुत करके अलग हट जाती है और छत पर खड़ी होकर लोगों को आते-जाते देखती रहती । लेकिन वह सुन्दर जवान लड़को को सामने से जाती देखती तो उसके भीतर तूफान उठ खड़ा होता । भीतर से बाहर तक अपनी जवानी की आग में जल रही थी । कोई सहारा नहीं मिलता था । 48 अंत में फिर वे मौका देखकर किसी दूसरे लड़के के साथ भाग जाती है । फिर वह लड़का भी उसे छोड़ कर चला जाता है । लेकिन लड़की जब एक बार बदनामी का दामन ओढ़ लेती है तो उसे हमेशा इसी रास्ते पर चलना पड़ता है क्योंकि समाज उसे वेश्यालय तक पहुंचाता है । लेकिन शराफत की जिन्दगी बसर करना नहीं देते है । उनकी एक भूल से सारा जीवन ही नष्ट हो जाता है ।

यह बात सही है कि सेक्स जीवन की सबसे बड़ी समस्या नहीं है लेकिन फिर भी अन्य समस्याओं की भांति यह समस्या भी अत्यन्त सूक्ष्म और जटिल होती जा रही है । जो अनेक कुंठाओं और विकृतियों को जन्म देती है । इसलिये सेक्स के चित्रण और तत्सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण में विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है ।

मानव जीवन में अनेक दुर्बलताएं और विकृतियां भरी पड़ी है । भूख के समान भोग भी एक सहज प्रवृत्ति है । स्त्री पुरुष का आकर्षण चिरंतन है । यह आकर्षण मानव की सबलता और दुर्बलता दोनों ही है ।

सचमुच औरत की सुन्दर देह और भरी जवानी पाप है - उसे किसी को दो तो दुख, न दो तो दुख, इसे जोगवो तो तकलीफ और बांट दो तो तकलीफ। कोई भीतर का दरद तो देखता नहीं है। 49

लोग है कि जब जी चाहे जानवर की तरह अपनी देह की प्यास बुझा लेते है। भूखे मरद रंडियों के पास चले जाते है। ऐयाश धनी आदमी धन के बल पर औरतें घर बुला लेते है और मनचली औरतें इशारा करके किसी भी भले-बुरे आदमी से अपनी भूख ठंडी कर लेती है। 50

लेकिन फिर भी औरतें बदनामी के डर से लोक-समाज की प्रतिष्ठा के डर से भी सहज नियन्त्रन भी कर लेती है। लेकिन आज पश्चिमी सभ्यता की देखा-देखी आज की आधुनिक अॅल्ट्रा मार्डन कहलाने वाली लड़कियों में वह दया शर्म नहीं रहीं है।। वे भौतिक सुख-सुविधाओं को पाने की लालच में गलत रास्ते पर चल निकली है। यदि उनके पति उनको भौतिक सुख-सुविधाओं की पूर्ति करने में असमर्थ है। तो वे सब ऐशों-आराम पाने के लिये पर-पुरूष की तरफ देखती है। "रात का सफर" उप0 में में मिसेज लीला इसी प्रकार की औरतों की गिनती में आती है। "बिना दरवाजे का मकान" उप0 में सेठानी अपने पति इन्सपेक्टर के होते हुए भी दूसरे पुरूषों के साथ अठखेलियां करती हुई घूमती रहती है। उन्हीं की देखा-देखी उनकी बेटी भी इसी नक्शे कदम पर चलती है।

"अपने लोग" उप0 में कलावती के पति के होते हुए भी कलावती हर समय दूसरे नवयुवको से घूमती फिरती तथा गलत सम्बन्ध स्थापित करती थी। जिसकी शर्म की वजह से उसके पति आत्म-हत्या कर लेते है। "भविष्य" कहानी में महिया भी योग्य शिक्षित पति के होते हुए भी अपने प्रेमी को अपनाने के लिये पति को छोड़ना पसन्द करती है। इसके अतिरिक्त भी कुछ ऐसी भी औरते होती है। जो पेट की खातिर मजबुरी से ऐसे कार्य करने को बाध्य होती है। कुछ ऐशोपरस्त औरतें दूसरी औरतों की कमजोरी का फायदा उठाकर भी उनको ऐसा कार्य करने पर मजबुर करती है। "सूखता हुआ तालाब" में, चेन्डया को पहले गलत रास्तों पर डालकर फिर बदनाम कराके गांव छुड़ाने पर मजबुर करते है। "मेरी भाई है न, वह बड़ी हरजाई है। सब उसी का किया हुआ है। उसी के कारण तो मैं रंडी बन गयी और पेट में बच्चा आया तो उसने चाहा कि बच्चे को गिरा दूं।

मैंने इन्कार कर दिया । शिवलाल बाबा तो मुंह काला करके गायब हो गये लेकिन दयाल बाबू रोज हमें धमकी देते रहे कि साली नाम बताया तो थाने में बंद करवा कर तेरी ऐसी की तैसी करवा दूंगा और पेट में जो झोरी लटकाए घूम रहीं है उसे भी खत्म कर, नहीं तो तुझे भी खत्म कर दिया जायेगा । 51

इसी उप0 में मोतीलाल अपनी बहू के साथ अवैध सम्बन्ध स्थापित करने को गलत नहीं मानतें हैं उनकी दृष्टि से, "बहु अगर रांड़ हो जाये - तो क्या जिंदगी भर तरसती रहे । बहुं-ससुर का सम्बन्ध सब वाहियात बातें है । विज्ञान की दृष्टि से शरीर शरीर है, उसकी अपनी भूख होती है । भूख मिटाना एक शारीरिक आवश्यकता है, उसमें धर्म-कर्म कहां आता है । मैं उसकी भूख नहीं मिटाता तो छिपकर कोई और मिटाता और जब पत्नी मायके चली जाती है तब वह भी बहुत अकेलापन अनुभव करता है, ठीक है, इसमें कोई बुराई नहीं है । 52

और भी कई ऐसे पात्र इसमें है जो छिप कर या उसको राजनैतिक कारण बता कर ऐसे कार्य करते है । लीला भी रमदौना के न होने पर रविन्दर से संतुष्ट हो जाती थी । लेकिन "जल टूटता हुआ उप0 में पार्वती ब्राहण हंसिया चमार को भगाने के लिये मजबुर करती हैं फिर पकड़ी जाने पर सारा दोष उसी पर सौप लेती है । स्वयं पाकबन जाती है । आज भी बड़े-बड़े घरों में लड़कियों छुप-छुप कर दुराचार करती हैं फिर भी स्वयं इज्जत वाली बन कर दूसरों की इज्जत को उछालती है । हमारी जाति की औरतें अगर बिकेंगी तो गरीबी की मार से बिकेंगी और आपके यहां की औरतें बिकती है खाली सौक पूरा करने के लिये । गरीबी से बिकना बेभिचार नहीं है बीबीजी, सौकिया मरद की गोद बदलते रहना वेभिचार है । 53

इस प्रकार मिश्र जी ने नारी के दोनों रूपों का वर्णन किया है । उनके सादगी और बेभिचार दोनों को प्रस्तुत किया है ।

सन्दर्भ सूची

01) जल टूटता हुआ उपन्यास — पृ0 - 472

02) अपने लोग उपन्यास — पृ0 - 269

03) आदिम राग उपन्यास — पृ0 - 48

04) -"- -"- — पृ0 - 70

05) अपने लोग उपन्यास — पृ0 - अपने

06) मुर्दा मैदान कहानी — पृ0 - 353

07) रोटी कहानी — पृ0 - 20

08) पराया शहर कहानी — पृ0 - 269

09) दिनचर्या कहानी — पृ0 - 358

10) बिना दरवाजे का मकान उपन्यास — पृ0 - 57

11) घर कहानी — पृ0 - 287

12) आखिरी चिट्ठी — पृ0 - 425

13) घर लौटने के बाद कहानी — पृ0 - 89

14) एक वह कहानी — पृ0 - 303

15) चिट्ठियाँ के बीच कहानी — पृ0 - 201

16) दूसरा घर उपन्यास — पृ0 - 68

17) अपने लोग उपन्यास — पृ0 - 128

18) मुर्दा मैदान कहानी — पृ0 - 348

19) बिना दरवाजे का मकान उपन्यास — पृ0 - 105

20) मिस फिट कहानी — पृ0 - 264

21) रोटी कहानी — पृ0 - 22

22) बिना दरवाजे का मकान — पृ0 - 88

23) मुर्दा मैदान कहानी — पृ0 - 350

24) अपने लोग उपन्यास — पृ0 - 165

25) रात का सफर उपन्यास — पृ0 - 71

26) आकाश की छत उपन्यास — पृ0 - 102

27) -"- -"- — पृ0 - 13

28) -"- -"- — पृ0 - 115

29)	कादम्बिनी, सितम्बर	पृ० – 106
30)	रचनाकार राम-दरश मिश्र	पृ० – 99
31)	लड़की कहानी	पृ० – 513
32)	बेला मर गयी कहानी	पृ० – 72
33)	दूसरा घर उपन्यास	पृ० – 253
34)	वह औरत कहानी	पृ० – 53
35)	आखिरी चिट्ठी	पृ० – 432
36)	एक भटकी हुई मुलाकात	पृ० – 177
37)	अकेली वह	पृ० – 30
38)	रात का सफर उपन्यास	पृ० – 11
39)	–"– –"–	पृ० – 75
40)	अपने लिये	पृ० – 42
41)	हद से हद तक कहानी	पृ० – 504
42)	अपने लिये कहानी	पृ० – 39
43)	बिना दरवाजे का मकान उपन्यास	पृ० – 104
44)	एक अधूरी कहानी	पृ० – 391
45)	–"– –"–	पृ० – 376
46)	–"– –"–	पृ० – 379
47)	–"– –"–	पृ० – 379
48)	हद से हद तक कहानी	पृ० – 504
49)	जल टूटता हुआ उपन्यास	पृ० – 146
50)	बिना दरवाजे का मकान	पृ० – 128
51)	सूखता हुआ तालाब	पृ० – 117
52)	–"–	पृ० – 51
53)	बिना दरवाजे का मकान	पृ० – 105